ब्रह्म जीवन्धर

जीवन-परिचय : ब्रह्म जीवन्धर भट्टारक सोमकीर्ति के प्रशिष्य एवं यश:कीर्ति के शिष्य थे। भट्टारक सेामकीर्ति काष्ठ संघ की नन्दितट-शाखा के गुरु थे तथा ये 10वीं शताब्दी के भट्टारक रामसेन की परम्परा में हुए हैं। ब्रह्म जीवन्धर इन्हीं यश:कीर्ति के शिष्य हैं।

इनका समय विक्रम संवत् की 16वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : ब्रह्म जीवन्धर द्वारा रचित निम्नलिखित रचनाएँ प्राप्त हैं—

1. गुणस्थानवेलि, 2. खटोलारास, 3. झुबुंकगीत, 4. श्रुतजयमाला, 5. नेमिचरित 6. सतीगीत, 7. तीनचौबीसीस्तुति, 8. दर्शनस्तोत्र, 9. ज्ञानविरागविनती, 10. आलोचना, 11. बीसतीर्थंकर जयमाला, 12. चौबीस तीर्थंकर जयमाला